प्रमेय कमल मार्त्तण्ड भाग-२ (फोल्डर नं. ०१२७७)

मूल-प्रभाचन्द्राचार्य – अनुवाद-आर्यिका जिनमतीजी

मुख्य टाइटल

विषय परिचय

द्वितीय भाग में आगत परीक्षामुख के सूत्र

विषयानुक्रमणिका

बौद्ध एवं नैयायिक द्वारा अभिमत अर्थकारणवादका निरसन तथा आलोककारणवादका निरसन ---- १-२९

पदार्थ और प्रकाश ज्ञानके कारण नहीं है क्योंकि वे ज्ञान के विषय हैं ----------३

घटादि विषयक ज्ञान घटादि पदार्थोंका कार्य है यह किसी अन्य प्रमाण द्वाराज्ञात होता है ऐसा कहना भी आसत् है ---------- ४

पदार्थ और पदार्थके साथ ज्ञानका अन्वय व्यतिरेक नहीं पाया जाता ---------- ६

विपर्यय आदि ज्ञानोंमें कौनसा पदार्थ कारण है ---------- ९

संशयादि ज्ञान भ्रांत है अतः बिना पदार्थके होते हैं ऐसा कहना असत् है ---------- ११

नैयायिकके ईश्वरका ज्ञान नित्य होनेसे पदार्थसे उत्पन्न नहीं हो सकता ---------- १६

पदार्थ जहां नहीं होते वहां भी प्रतीति होती है ---------- १७

यदि अंधकारका पदार्थरूप स्वीकार नहीं करते तो प्रकाश भी सिद्ध नहीं होगा... ---------- २०

ज्ञानमें वैशद्य प्रकाशसे आया तो जब ज्ञान प्रकाशको विषय बनाता है तब उसमें वैशद्य किससे आता है ----------२१

ज्ञान पदार्थ और प्रकाशसे उत्पन्न नहीं हुआ तो भी उनको प्रकाशित करता है ---------- २४

अपने आवरणके क्षयोपशमानुसार ज्ञान प्रतिनियत पदार्थको प्रतिभासित करता है ---------- २५

जो ज्ञानका कारण वही ज्ञान द्वारा जाना जाता है ऐसा माने तो इन्द्रियोंके साथ व्यभिचार होगा ---------- २७

आवरण विचार, संवर निर्जरा सिद्धि, कर्मोंका पुद्गलपना---------- ३०-४७

द्रव्यादि सामग्री विशेष द्वारा नष्ट हो गये हैं आवरण जिसके ऐसे अतीन्द्रिय ज्ञानको मुख्य प्रत्यक्ष कहते हैं ---------- ३०

शरीरादिको आवरण नहीं मानते अपितु कर्म नामक पुद्गल को कर्म मानते हैं---------- ३३

अविद्याको भी आवरण नहीं मानते ---------- ३५

अदृष्ट नामा आत्माके गुणको आवरण मानना भी अयुक्त है ---------- ३६

संवर निर्जरा सिद्धि ---------- ४०-४७

सारांश ---------- ४७

सर्वज्ञत्ववाद ---------- ४९-९८

सर्वज्ञके विषयमें मीमांसकका पूर्वपक्ष ---------- ५०-६६

मीमांसक-सर्वज्ञ नहीं है क्योंकि... ---------- ५०

अनुमान द्वारा सर्वज्ञ सिद्ध नहीं होता क्योंकि... ---------- ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वज्ञ सिद्धिमें प्रयुक्त हुआ प्रमेयत्व हेतु भी असत् है ---------- ५३
आगमसे भी सर्वज्ञ सिद्धि नहीं होती... ---------- ५५
अर्थापत्तिसे भी सर्वज्ञ सिद्ध नहीं होता...---------- ५६
कोई भी प्रत्यक्ष ज्ञान इन्द्रियोंसे निरपेक्ष नहीं होता... ---------- ५९
यदि सर्वज्ञ धर्म अधर्मका ग्राहक है तो वह.... ---------- ६२
जैन द्वारा मीमांसकके मंतव्यका निरसन ---------- ६७-९८
सर्वज्ञ प्रत्यक्षसे सिद्ध नहीं होता अपितु... ---------- ६७
कोई आत्मा सकल पदार्थोंको साक्षात् जानने वाला है इत्यादि अनुमानसे उसकी सिद्धि होती है ---------- ६८-७१
धर्म अधर्म संज्ञक पदार्थ इन्द्रियोंसे उपलब्ध किस कारणसे नहीं होते---------- ७२
मंत्र प्रश्नादिसे संस्कारित पुरुष अतीत एवं अनागतको भी ज्ञात करते हैं... ---------- ७७
उपदेश द्वारा अखिल विषयका सामान्य ज्ञान होना संभव ही है...---------- ७९
आगमादि अस्पष्ट ज्ञानसे स्पष्ट ज्ञान कैसे होगा यह प्रश्न भी ठीक नहीं... ---------- ८०
शीत उष्णादि परस्पर विरोधी पदार्थ एक साथ एक ज्ञानमें प्रीत होते हैं... ----------८१
युगपत् असेष पदार्थ ज्ञात होनेसे द्वितीय क्षणमें असर्वज्ञ बन जायेगा ऐसी आशंका व्यर्थ है ---------- ८२
सर्वज्ञ परगत रागादि को जानने मात्रसे रागी नहीं होता... ---------- ८३
सर्वज्ञका ज्ञान विश्रांत नहीं होता... ---------- ८५
सकल पदार्थ साक्षात्कारी सर्वज्ञ है, क्योंकि उसमें कोई बाधक प्रमाण नहीं है ---------- ८७
विवादस्थ पुरुष सर्वज्ञ नहीं इत्यादि अनुमानमें प्रयुक्त वक्तृत्व हेतु सदोष है ---------- ८९
सर्वज्ञमें वक्तृत्वका अभाव सिद्ध होना असंभव है ---------- ९०
आपका आगम भी सर्वज्ञ अभाव नहीं करता वह तो सद्भाव ही सिद्ध करता है---------- ९३
उपमान अर्थापत्ति भी सर्वज्ञका अभाव सिद्ध नहीं करते... ---------- ९४
अभाव प्रमाण स्वयं ही अभावरूप है अतः सर्वज्ञका अभाव नहीं कर सकता... ---------- ९५
ईश्वरवाद ---------- ९९-१४४
ईश्वर सिद्धि के लिये नैयायिक वैशेषिकका पूर्व पक्ष ---------- ९९-१०८
नैयायिक-पृथ्वी, पर्वतादि पदार्थ किसी बुद्धिमान से निर्मित है, क्योंकि वे कार्य हैं ---------- ९९
पृथ्वी आदि कार्य इसलिए कहलाते हैं कि वे सावयव हैं... ---------- १००
शरीर रहित होने से ईश्वर की उपलब्धि नहीं होती... ---------- १०२
ज्ञान चिकीर्षा और प्रयत्नाधारता ये ही कर्तृत्व है... ---------- १०२
व्यास ऋषिईश्वर को मानते हैं... ---------- १०४
स्वरूप प्रतिपादक वेद वाक्य भी इस विषय में अप्रमाण नहीं... ---------- १०४
भगवान करुणा से शरीरादि की रचना करते हैं...---------- १०५
वार्तिककार का ईश्वर सिद्धि के लिये अनुमान... ---------- १०६
जैन द्वारा ईश्वरवाद का निरसन---------- १०८-१४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृथ्वी आदि में कार्यत्व सिद्धि के लिये प्रयुक्त सावयवत्व हेतु का खंडन... ---------- १०८
यौग की विनाश और उत्पाद की प्रक्रिया हास्यास्पद है ---------- १०९
आपके यहां सत्ता किस रूप है ----------११२
ईश्वर की बुद्धि क्षणिक है या नित्य.... दोनों पक्ष गलत हैं... ---------- ११६
ईश्वर और हमारी बुद्धइ में बुद्धिपना समान होने पर भी ईश्वर की बुद्धि नित्य है... -------- ११७
पिशाच आदि भी शरीर मुक्त होने से ही शाखाभंगादि कार्य करते हैं.... ---------- १२३
ईश्वर की शरीर कार्यरूप है या नित्य ---------- १२४
आकाशवत् पृथ्वी आदि में भी कर्त्ता का अभाव है ---------- १२५
अचेतन पदार्थ चेतन से अधिष्ठित होकर ही कार्य करे ऐसा नियम नहीं... ---------- १२८
कारणों की शक्ति का ज्ञान होने पर ही कर्त्ता प्रवृत्ति करता है... ---------- १२९
यौग के ईश्वर कर्तृत्व सिद्धइ के लिये प्रयुक्त अनुमान में..... ----------१३१
करुणा से दृष्टि रचे तो सुखदायक शरीरादि क्यों नहीं रचता ---------- १३२
राजा के समान ईश्वर यदि कर्मानुसार फल देता है तो वह रागी द्वेषी हो जायगा... -------- १३४
जो समर्थ स्वभावी होता है वह सहायक की अपेक्षा नहीं करता... ---------- १३६
पृथ्वी पर्वत आदि पदार्थ एक एक स्वभाव पूर्वक नहीं होते... ---------- १४०
विभिन्न काल एवं विभिन्न आकार वाले हैं... ---------- १४०
सारांश ---------- १४२
प्रकृति कर्त्तृत्ववाद ---------- १४५-१७६
सांख्य-सृष्टिकी प्रक्रिया प्रधानसे प्रसूत है इत्यादि पूर्वपक्ष ---------- १४५-१५२
प्रकृतिसे महान् उत्पन्न होता है.... ---------- १४६
कारण जिसरूप होता है कार्य तदनुरूप ही होता है---------- १४७
पांच हेतुओंसे सत्कार्यवादकी सिद्धि ---------- १४९
महदादि भेदोंका परिमाण होना इत्यादि.... ---------- १५१
जैन द्वारा प्रकृति कर्त्तृत्वका निरसन... ---------- १५३-१७६
महदादि भेद प्रकृतिसे अभिन्न माननेके कारण उनमें कार्य कारण भाव बन नहीं सकता... ---------- १५३
कार्य कारण भाव अन्वय व्यतिरेक द्वारा जाना जाता है... ---------- १५४
असत् अकरणात् इत्यादि हेतु असत् कार्यवादके पक्षमें भी समानरूपसे घटित होते हैं... --- १५७
शक्तिकी अपेक्षा कार्यको सत् माने तो भी ठीक नहीं... ---------- १५८
शक्तिकी अभिव्यक्तिके लिये कारकोंका व्यापार मानना भी घटित नहीं होता... ---------- १५९
अभिव्यक्ति किसे कहते हैं स्वभावमें अतिशय होना या तद्..... ---------- १६०-१६१
कारण शक्तिका प्रतिनियम तो असत् कार्यवादमें भी घटित होता है...---------- १६४
भेदोंका समन्वय होनेसे एक प्रधान ही कारणरूप सिद्ध होता है.... ---------- १६५
समन्वयात् इस हेतुमें अनेकांत दूषण है... ---------- १६७
निरीश्वर सांख्यका पक्ष भी असत् है... ---------- १६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रधान और ईश्वर सम्मिलित होकर कार्य करते हैं.... ---------- १७०
जगत्की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय रूप क्रिया करनेकी सामर्थ्य ईश्वर और प्रधानमें
एक साथ है कि नहीं.... ---------- १७२
सत्वादि गुणोंका आविर्भाभावादि भी सिद्ध नहीं.... ---------- १७३
सारांश ---------- १७५
कवलाहार विचार ---------- १७७-१९९
जीवन्मुक्त दशामें अरहंत कवलाहार करते हैं ऐसा श्वेतांबर कहते हैं... ---------- १७७
प्रमत्त गुणस्थानमें परमार्थभूत वीतरागता नहीं है.... ---------- १७८
बिना अभिलाषाके आहार होना रूप अतिशय माने तो.... ---------- १७९
कवलाहार ग्रहण करने वालेके अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञान संभव नहीं... ----------१८१
लाभांतरायकर्मका सर्वथा नाश होनेसे दिव्य परमाणुओंका आगमन प्रतिसमय होता है... ------- १८४
मोहनीयके अभावमें असाता क्रय करनेमें असमर्थ है...---------- १८६
अनाकांक्षारूप क्षुधा माने तो वह भी दुःखरूप ही घटित होती है... ---------- १९१
भगवान्को देवगण आहार कराते हैं ऐसा सिद्ध नहीं होता... ---------- १९२
केवलीके ग्यारह परीषह उपचारसे माने हैं.... ---------- १९५
भोजन करते समय दिखायी न देना रूप अतिशय मानते हैं तो भोजन नहीं करना....--------- १९६
सारांश ---------- १९८
मोक्षस्वरूप विचार ---------- २००-२५६
वैशेषिकका पक्ष-अनेंत चतुष्टय स्वरूप लाभको मोक्ष नहीं कहते... ---------- २०१
मिथ्याज्ञानके नष्ट होने पर राग द्वेष उत्पन्न नहीं होते... ---------- २०२
तत्त्व ज्ञान साक्षात् कर्म नाशमें प्रवृत्ति नहीं करता... ---------- २०३
विघ्न बाधायें उपस्थित न हो अतः.... ---------- २०४
वेदान्ती-वैशेषिक बुद्धि आदि गुणोंका मोक्षमें अभाव.... ---------- २०६
वैशेषिक द्वारा वेदांतोंके मोक्षस्वरूपका निरसन.... ---------- २०७-२१२
आप वेदान्ती आत्माके सुख नामा गुणको नित्य मानते हैं.... ---------- २०७
विशुद्ध ज्ञानकी उत्पत्ति होना मोक्ष है ऐसा बौद्ध अभइमत मोक्ष स्वरूप अयुक्त है... -------- २१२
अनेकान्तकी भावनासे विशिष्ट प्रदेशमें ज्ञानरूप शरीरादिका लाभ होना... ---------- २१६
ब्रह्माद्वैत वादी आत्माके एकत्वका ज्ञान होनेसे... ---------- २१७
प्रकृति और पुरुषके भेद ज्ञानका मोक्ष कारण है... ---------- २१८
जैन द्वारा वैशेषिकके मंतव्यका निरसन... ---------- २२०
बुद्धि आदि विशेष गुणोंका अत्यंत उच्छेद होता है... ---------- २२४
तत्त्वज्ञानसे मिथ्याज्ञान नष्ट होना आदि कथन अयुक्त है... ---------- २२६
समाधि के बलसे अनेक शरीरोंको उत्पन्न कर योगीजन कर्मोंका उपभोग कर डालते हैं.... ---- २२८
ब्रह्मवादी आनंदरूप मोक्ष कथंचित् इष्ट होता किन्तु... ---------- २२९
बौद्धका विशुद्ध ज्ञानोत्पत्ति रूप मोक्ष तब मान्य होता जब... ---------- २३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुप्त उन्मत्तादि दशामें ज्ञानकी सिद्धि... ---------- २३७-२४६
मुक्ति में भी अनेकांतकी व्यावृत्ति नहीं है,.... ---------- २४८
सांख्यके मोक्षस्वरूपका निरसन ---------- २५०
मोक्ष स्वरूप विचार का सारांश ---------- २५४-२५६
स्त्रीमुक्ति विचार.... ---------- २५७-२६२
श्वेतांबर-स्त्रियोंके भी मुक्ति होती है... ---------- २५७
दिगंबर-स्त्रियोंमें ज्ञानादि गुणोंका परम प्रकर्ष नहीं होता... ---------- २५७
स्त्रियोंमें मोक्षका कारणभूत संयम नहीं... ---------- २६०
बाह्याभ्यंतर परिग्रहके कारण स्त्रियोंके मोक्षके योग्य जैसा संयम नहीं है... ---------- २६२
आगम भी स्त्रीमुक्ति समर्थक नहीं.... ---------- २६७
सारांश... ---------- २७१-२७२
परोक्ष प्रमाणका स्वरूप एवं भेद ---------- २७३
स्मृति प्रामाण्य विचार ---------- २७६-२८२
प्रत्यभिज्ञान प्रामाण्य विचार ---------- २८३-३०३
मीमांसक प्रत्यभिज्ञानको प्रत्यक्ष स्वरूप मानता है,.... ---------- २८३
जैन द्वारा उसका खंडन... ---------- २८४
बौद्ध प्रत्यभिज्ञानको नहीं मानेंगे तो नैरात्म भावनाका अभ्यास नहीं बनेगा... ---------- २८९
प्रत्यभिज्ञान अनुमान प्रमाणरूप नहीं मान सकते... ---------- २९६
मीमांसक का सादृश्य प्रत्यभिज्ञान को उपमारूप सिद्ध करने का प्रयास ---------- २९७
सारांश ---------- ३०२
तर्कस्वरूप विचार ---------- ३०४-३१९
तर्कप्रमाणको प्रत्यक्षमें अंतर्भूत करनेका पक्ष ---------- ३०८
तर्क के विषयभूत व्याप्तिका ज्ञान मास प्रत्यक्ष द्वारा भी संभव नहीं... ---------- ३१२
सारांश ---------- ३१८
हेतोस्त्रैरूप्यनिरास ---------- ३२०-३२९
अनुमान प्रमाण का लक्षण... ---------- ३२०
हेतु का लक्षण त्रैरूप्य है ऐसी बौद्ध मान्यता का निरसन....---------- ३२१
सपक्ष सत्व रूप लक्षण के नहीं रहते हुए भी हेतु का अन्वय बन सकता है... ---------- ३२८
सारांश ---------- ३२९
हेतोः पाञ्चरूप्य खण्डनम् ---------- ३३०-३४५
हेतुको पांचरूप मानने वाले यौग का पक्ष... ---------- ३३०
साध्याविनाभावित्व के विना अबाधितविषयत्वादि हेतु के लक्षण असंभव है... ---------- ३३२
सारांश ---------- ३४५
पूर्ववदाद्यनुमानत्रैविध्यनिरास...---------- ३४६-३६३
योग के यहां पूर्ववत्, शेषवत्, सामान्यतोदृष्ट ऐसे अनुमान के तीन भेद माने हैं...---------- ३४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्याप्ति तीन प्रकार की है.... ---------- ३५३
अविनाभाव के दो भेदों का लक्षण...---------- ३६४
साध्य का लक्षण...---------- ३६६
साध्य के इष्ट और अबाधित इन दो विशेषणों की सार्थकता... ---------- ३६६
धर्मी का ही पक्ष यह नाम है और वह प्रसिद्ध होता है ---------- ३६९-३७०
पक्ष प्रयोग की आवश्यकता... ---------- ३७४-३७६
अनुमान के दो ही अंग हैं... ---------- ३७७
उदाहरण अनुमान का अंग नहीं.... ---------- ३७७-३८२
दृष्टान्त एवं उनपय, निगमन के लक्षण.... ---------- ३८४
अनुमान के दो भेद-स्वार्थानुमान परार्थानुमान ---------- ३८५
उपलब्धि और अनुपलब्धिरूप हेतु... ---------- ३८८
पूर्वचरादि हेतुओं का कार्य हेतु में अन्तर्भाव नहीं हो सकता... ---------- ३९१-३९९
अविरुद्धोपलब्धि हेतु के छह भेद उदाहरण सहित ---------- ४००-४०३
विरुद्धोपलब्धि हेतु के छह भेद सोदाहरण ---------- ४०४-४०६
अविरुद्ध-अनुपलब्धि हेतु के सोदाहरण सात भेद... ---------- ४०६-४१२
विरुद्ध अनुपलब्धि हेतु के सोदाहरण तीन भेद---------- ४१२-४१३
परंपरा रूप हेतुओं का अन्तर्भाव... ---------- ४१४-४१५
हेतुओं का चार्ट ---------- ४१८
वेद अपौरुषेयवादः ---------- ४१९-४५६
आगम प्रमाण का लक्षण ---------- ४१९
आगम को अपौरुषेय मानने वाले प्रवादी की शंका ---------- ४२०
प्रत्यक्ष प्रमाण से अपौरुषेय वेद की सिद्धि नहीं होती... ---------- ४२१
अनुमान प्रमाण से भी नहीं... ---------- ४२२
कर्त्ता का अस्मरण होने से वेद को अपौरुषेय मानते हैं... ---------- ४२५
वेद का अध्ययन गुरु अध्ययन पूर्वक होता है... इत्यादि अनुमान असत् है ---------- ४३४
आगम प्रमाण द्वारा भी वेद की अपौरुषेयता सिद्ध नहीं... ---------- ४४१
वेद के व्याख्याता पुरुष अतीन्द्रिय पदार्थ के ज्ञाता है अथवा नहीं...---------- ४४६
मनुष्य द्वारा रचित शब्दों के समान ही वेद में शब्द पाये जाते हैं.... ---------- ४५०
सारांश ---------- ४५५-४५६
शब्द नित्यत्ववादः ---------- ४५७-५२२
शब्दों को नित्य मानने में मीमांसक का पूर्वपक्ष ---------- ४५७-४६७
मीमांसक-शब्द नित्य है, क्योंकि... ---------- ४५७
सादृश्य शब्द से अर्थ की प्रतीति मानना ठीक नहीं... ---------- ४५९
जैन द्वारा उक्त मीमांसक के पक्ष का निराकरण... ---------- ४६७
अर्थप्रतिपादकत्व की अन्यथानुपपत्तिरूप मीमांसक का हेतु अयुक्त है... ---------- ४६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यदि सदृश शब्द द्वारा अर्थ प्रतिपादकत्व होना नहीं मानते तो... ---------- ४७०
उदात्तादि धर्म शब्द के न कि ध्वनियों के... ---------- ४८०
तालु आदि अथवा ध्वनियां शब्दों के व्यंजक कारण नहीं अपितु कारक कारण है ---------- ४८१
शब्द संस्कार, श्रोत्र संस्कार और उभय संस्कार... ---------- ४९२
मीमांसक शब्द को सर्वगत मानते हैं अतः...---------- ४९९
एक ही व्यंजक द्वारा अनेक व्यंग्यभूत पदार्थों का प्रकाशन होता है... ---------- ५०५
दर्पणादि पदार्थ स्वसामग्री के अभाव में उक्त आकारों को हमेशा... ---------- ५१३
जैन की मान्यता है कि शब्द श्रोता के पास जाता है.... ---------- ५१७
अदृश् की कल्पना करना रूप दोष तो मीमांसक के पक्ष में ही आता है... ---------- ५१८
सारांश ---------- ५२१-५२२
शब्द संबंध विचारः ---------- ५२३-५३३
सहज योग्यता के कारण शब्द अर्थ की प्रतीति कराते हैं... ---------- ५२३
शब्द और अर्थ का वाच्य वाचक सम्बन्ध अनित्य है... ---------- ५२५
संकेत पुरुष के आश्रित होता है... ---------- ५२९
यह शब्दार्थ का नित्य सम्बन्ध इन्द्रियगम्य है अथवा... ---------- ५३०
शब्द अपने अर्थ को स्वयं नहीं कहते... ---------- ५३२
अपोहवादः ---------- ५३४-५८२
बौद्ध-पदार्थ के अभाव में भी शब्द उपलब्ध होते हैं... ---------- ५३४
जैन-सभी शब्द अर्थ के अभाव में नहीं होते... ---------- ५३५
शब्द केवल अन्यापोह के ही वाचक हैं ऐसा मानना प्रतीति विरुद्ध है... ---------- ५३६
बौद्ध मत में शब्द का वाच्य जो अपोह सामान्य माना है सो वह... ---------- ५३८
बौद्ध-अगो.... इस पद में स्थित जो गो शब्द है उस गो शब्द से... ---------- ५४५
जैन-यदि ऐसी बात है तो सभी शब्द का अर्थ अपोह हो.... ---------- ५५२
आप बौद्ध के यहां कर्ण ज्ञान में प्रतिभासित होने वाला स्वलक्षण.... ---------- ५५३
अपोह शब्द द्वारा वाच्य है या अवाच्य ---------- ५५५
बौद्ध-जिनमें संकेत नहीं किया वे शब्द अर्थाभिधायक होते हैं... ---------- ५५९
गोत्व आदि सामान्य रूप जाति में शब्दों का संकेत होता है... ---------- ५६१
जैन-संकेत किये जानेपर ही शब्द अर्थाभिधायक होते हैं... ---------- ५६३
उत्पन्न हुए पदार्थोंमें संकेत होना संभव हैं... ---------- ५६६
विशद प्रतिभास और अवशद् प्रतिभास सामग्री के भेदसे होता है... ---------- ५६८
जो जहांपर व्यवहारको उत्पन्न करता है वह उसका विषय होता है... ---------- ५६९
अग्निकी प्रतीतिका कायं स्फोट आदि होना नहीं है... ---------- ५७१
संपूर्ण वचन विवक्षामात्रको कहते हैं ऐसा माने तो... ---------- ५७४
यदि शब्दको अप्रवर्त्तक मानेंगे तो प्रत्यक्षादिको भी अप्रवर्त्तक मानना होगा...---------- ५७६
अभिप्राय अनंत होनेसे शब्द द्वारा अभिप्रायको जानना अशक्य है....---------- ५७८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साधारणता और निर्देश्यता भी वस्तुका निजी स्वरूप है.... ---------- ५७९
सारांश ---------- ५८१-५८२
स्फोटवादः ---------- ५८३-६०३
पूर्वपक्ष-वर्ण पदादिसे व्यक्त होने वाला नित्य व्यापक ऐसा स्फोट है वही अर्थोंका.... --------- ५८३
स्फोट श्रोत्रज्ञानमें निरंश एवं अक्रमरूप प्रतिभासित होता है.... ---------- ५८६
उत्तरपक्ष जैन-स्फोटसे अर्थ प्रतीति नहीं होती अपितु.... ---------- ५८७
पूर्व वर्णके ज्ञानसे उत्पन्न हुआ संस्कार प्रवाह रूपसे.... ---------- ५८८
आपने संस्कार तीन प्रकारका माना है वेग, वासना, स्थित स्थापक.... ---------- ५९१
वर्ण द्वारा स्फोटका संस्कार किया जाता है तो वह एक देशसे या सर्वदेशसे ---------- ५९२
स्फोटका अभिव्यंजक संस्कार न होकर वायु है ऐसा कहना भी अयुक्त है... ---------- ५९४
यदि शब्दका स्फोट अर्थ प्राप्तिमें निमित्त माना जाय तो.... ---------- ५९६
सारांश ---------- ६०२
वाक्य लक्षण विचारः ---------- ६०४-६२०
परस्परमें सापेक्ष किन्तु वाक्यांतर गत पदसे निरपेक्ष.... ---------- ६०४
प्रकरण आदिसे जो गम्य है, जिसमें पदांतरकी अपेक्षा है.... ---------- ६०५
कोई धातुक्रिया पद को ही वाक्य मानते हैं, कोई.... ---------- ६०६
मीमांसक-प्रभाकर पदके अर्थ के प्रतिपादन पूर्वक.... ---------- ६०९
वाक्य लक्षणका निश्चय होनेके अनंतर वाक्यके अर्थ पर विचार प्रारंभ होता है... ---------- ६१०
भाट्टका अभिहित अन्यवाद रूप वाक्यार्थ भी अयुक्त है.... ---------- ६१६
वाक्य के दो भेद हैं द्रव्य वाक्य और भाववाक्य... ---------- ६१८
सारांश ---------- ६१९-६२०
उपसंहार ---------- ६२१
प्रशस्ति ---------- ६२२
परीक्षामुख सूत्र पाठः ---------- ६२३-६२८
विशिष्ट शब्दावली ---------- ६२९
भारतीय दर्शनों का अति संक्षिप्त परिचय ---------- ६३९
शुद्धिपत्र ---------- ६४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org